Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 12, (मई, 2026)
पृष्ठ संख्या 13–14

किसान महिलाओं की समस्याएँ

डॉ. तृप्ति वर्मा[1] एवं शिवानी[2]

[2]छात्रा, [1]सहायक प्राध्यापक

खाद्य एवं पोषण विभाग, समुदाय विज्ञान महाविद्यालय

आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, भारत।

Email Id: – drtriptiv@gmail.com

परिचय एवं किसान महिलाओं की भूमिका

भारत में खेती और ग्रामीण आजीविका का बड़ा हिस्सा महिलाओं के श्रम पर आधारित है। किसान महिलाएँ खेत–खलिहान, पशुपालन, बीज संरक्षण, खाद– सिंचाई, अनाज भंडारण तथा घरेलू कार्य सभी में योगदान करती हैं। फिर भी, उनकी भूमिका अक्सर "अदृश्य श्रम" के रूप में मानी जाती है। उन्हें न पहचान मिलती है, न संसाधनों पर नियंत्रण। किसान महिलाओं की समस्याएँ सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य, तकनीकी व संरचनात्मक सभी स्तरों पर फैली होती हैं। इन समस्याओं के कारण वे अपनी पूरी क्षमता से कृषि कार्य नहीं कर पातीं और उनकी आर्थिक स्वतंत्रता भी सीमित हो जाती है।

सामाजिक व पारिवारिक समस्याएँ

1. **कार्य का दोहरा बोझ:** महिलाएँ खेत में पुरुषों जितना काम करती हैं, लेकिन साथ ही खाना बनाना, बच्चों की देखभाल, पशुपालन और घरेलू काम भी संभालती हैं। इसलिए उन पर कार्य का बोझ दोगुना होता है।
2. **निर्णय–निर्माण में भागीदारी कम:**
   - खेत की बुवाई, फसल बेचने, मशीन खरीदने जैसे निर्णयों में उनकी भूमिका कम होती है।
   - परिवार और समाज दोनों स्तर पर पुरुषों का नियंत्रण अधिक रहता है।
3. **सामाजिक मान्यता की कमी:** महिलाओं के कृषि–कार्य को 'सहयोग' माना जाता है, 'काम' नहीं। इससे उन्हें मजदूरी, श्रमिक अधिकार, या सुरक्षा की सुविधाएँ नहीं मिलतीं।
4. **शिक्षा और प्रशिक्षण की कमी:** ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा स्तर कम होने से वे नई कृषि तकनीकों, योजनाओं और बाजार की जानकारी से वंचित रह जाती हैं।

आर्थिक समस्याएँ

1. **भूमि पर स्वामित्व न होना:** भारत में बड़ी संख्या में महिलाएँ खेती करती हैं, लेकिन भूमि उनके नाम पर नहीं होती। इसका असर:–
   - बैंक ऋण नहीं मिल पाता
   - सरकारी योजनाओं का लाभ सीमित
   - कृषि में निर्णय–अधिकार कम
2. **वित्तीय संसाधनों तक पहुँच कम:** महिलाएँ अक्सर बैंक, सहकारी समितियों या किसान क्रेडिट कार्ड तक पहुँच पाने में कठिनाई महसूस करती हैं। कई जगहों पर बैंकिंग प्रक्रियाएँ भी उनके लिए जटिल होती हैं।
3. **मजदूरी में असमानता:** महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम मजदूरी दी जाती है, जबकि उनका श्रम समान या अधिक होता है।
4. **बाजार तक पहुँच कम:** फसल बेचने, मंडी जाने या भाव तय करने का काम अधिकतर पुरुष करते हैं। महिलाएँ उत्पादन में शामिल होती हैं, लेकिन बाजार से दूर रह जाती हैं।

स्वास्थ्य, तकनीकी और कार्य–स्थितियों से जुड़ी समस्याएँ

1. **स्वास्थ्य समस्याएँ:**
   - लंबे समय तक झुककर काम करने से पीठ–कमर दर्द
   - कीटनाशकों और रसायनों के संपर्क से स्वास्थ्य जोखिम
   - पोषण की कमी
   - गर्भावस्था के दौरान भी भारी काम करना
2. **तकनीक की कमी:**

- महिलाओं के अनुसार डिजाइन किए गए उपकरण उपलब्ध नहीं होते
- भारी मशीनरी चलाने का प्रशिक्षण नहीं दिया जाता
- पारंपरिक उपकरणों से काम करना कठिन और समय–साध्य होता है

3. सुरक्षा का अभाव:

- खेतों में अलग–अलग स्थानों पर अकेले काम करने से सुरक्षा जोखिम
- कई क्षेत्रों में शौचालय, पेयजल जैसी मूल सुविधाओं की कमी

4. जलवायु परिवर्तन का प्रभाव:

- सूखा, बाढ़, अनियमित वर्षा का सबसे अधिक बोझ किसान महिलाओं पर पड़ता है, क्योंकि
- वे बीज संरक्षण, पानी बचाने और पशुपालन की जिम्मेदारी संभालती हैं।

नीतिगत, संरचनात्मक समस्याएँ और समाधान

1. नीतिगत समस्याएँ:

- कृषि योजनाएँ और प्रशिक्षण अधिकतर पुरुषों के नाम पर चलते हैं।
- महिला किसानों की अलग श्रेणी नहीं मानी जाती, जिससे योजनाओं का लाभ कम मिलता है।

2. कृषि विस्तार सेवाओं तक पहुँच कम:

- कृषि अधिकारियों, विशेषज्ञों और ट्रेनिंग कैंपों तक महिलाओं की पहुँच सीमित ।
- घर से दूर या शहर में होने के कारण वे भाग नहीं ले पातीं ।

समाधान / सुझाव

भूमि अधिकार: महिलाओं को भूमि उत्तराधिकार अधिकार और संयुक्त भूमि पंजीकरण दिया जाए।

वित्तीय सुविधाएँ:

- बैंकिंग प्रक्रियाएँ सरल हों।
- महिला किसान क्रेडिट कार्ड।
- आत्म–सहायता समूह को मजबूत बनाना।

तकनीकी प्रशिक्षण:

- महिला–अनुकूल कृषि उपकरण।
- ग्राम स्तर पर प्रशिक्षण केंद्र।

स्वास्थ्य और सुरक्षा सुविधाएँ :

- कीटनाशक सुरक्षा प्रशिक्षण।
- ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार।

सामाजिक परिवर्तन :

- लैंगिक समानता पर जागरूकता।
- महिलाओं की निर्णय–निर्माण में भागीदारी बढ़ाना।

किसान महिलाओं की प्रमुख समस्याएँ

- **सामाजिक मान्यता का अभाव:** खेती में बड़ा योगदान होने के बावजूद महिलाओं को "किसान" नहीं माना जाता। उन्हें किसान की पत्नी या मजदूर समझा जाता है।
- **जमीन पर अधिकार नहीं:** अधिकतर जमीन पुरुषों के नाम होती है। महिला किसान सरकारी योजनाओं, बैंक लोन, आदि का लाभ नहीं ले पातीं।
- **कम मजदूरी:** पुरुषों के समान काम करने पर भी महिलाओं को कम वेतन मिलता है।
- **शिक्षा की कमी:** कम पढ़ाई के कारण नई तकनीकें, मशीनें, मोबाइल ऐप, सरकारी योजनाओं की जानकारी नहीं मिल पाती।
- **दोहरी जिम्मेदारी:** खेत का काम + घर का पूरा काम, दोनों संभालने का दबाव महिलाओं पर ही होता है।
- **स्वास्थ्य समस्याएँ** अत्यधिक शारीरिक श्रम, कुपोषण, एनीमिया, गर्भावस्था में भी खेती का काम, कीटनाशकों और रसायनों का दुष्प्रभाव
- **आर्थिक निर्भरता:** कम आय, वित्तीय निर्णयों में भागीदारी नहीं, अपनी कमाई पर भी नियंत्रण नहीं होता।
- **आधुनिक खेती तकनीक की कमी:** प्रशिक्षण, कृषि विज्ञान केंद्र और नई कृषि पद्धतियों तक पहुँच कम।
- **सुरक्षा संबंधी समस्याएँ** खेतों में अकेले काम करना, दूर खेतों या बाजार तक जाने में असुरक्षा।
- **सरकारी योजनाओं तक पहुँच की कमी:** योजनाओं की जानकारी नहीं, दस्तावेज और खाते पुरुषों के नाम होने के कारण लाभ नहीं मिल पाता।
- **जलवायु परिवर्तन का प्रभाव:** सूखा, बाढ़, अनिश्चित मौसम से फसल खराब, आर्थिक संकट का बोझ महिलाओं पर अधिक पड़ता है।
- **मानसिक तनाव:** लगातार परिश्रम ए परिवार और खेत दोनों का बोझ ए कम आय और भविष्य की चिंता ।